# TREE TROTTING IN UNIVERSITY OF DELHI

# दिल्ली विश्वविद्यालय में ट्री वॉक



CLUSTER INNOVATION CENTRE

संकुल नवप्रवर्तन केंद्र

हमारे आदरणीय मार्गदर्शक **अशनि सर** को समर्पित, जिनकी जैव विविधता के प्रति असीम लगन ने हमारी जिज्ञासा को पंख दिए और हमें पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की अद्भुत, रहस्यमयी दुनिया में एक अविस्मरणीय यात्रा पर ले गए।

# परिचय

दिल्ली विश्वविद्यालय के कैंपस में चलना एक छुपे हुए बाग में सैर करने जैसा है, जहाँ हर कोने में अद्भुत पौधे और पेड़ छिपे हुए हैं। यहाँ की सैर केवल एक झलक है, क्योंकि यहाँ की हर गली, हर मोड़ पर आपको नये नये रंग और जीवन के सुंदर अद्भुत दृश्य मिलेंगे। सबसे अच्छा समय यहाँ घूमने का मार्च से अप्रैल के बीच है, जब बाग़ खिल उठता है और हर ओर हरियाली की चादर बिछ जाती है।

हमारी यह सैर पेड़ों को सिर्फ नाम देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति की उन अनमोल सुंदरताओं को महसूस करने का एक प्रयास है जो हमारे चारों ओर रोज़ बिखरी रहती हैं।
तो, चलिए, इस हरे-भरे संसार में एक साथ सैर पर निकलते हैं और उसकी अद्भुत छटाओं को खोजते हैं।

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| कचनार | 1 |
| वरूण | 3 |
| करंज | 5 |
| कर्णिकार | 7 |
| सफेद बबूल | 9 |
| कदंब | 11 |
| जंगल जलेबी | 13 |
| शहतूत | 15 |
| गुलमोहर | 17 |
| सेमल | 19 |
| नीली गुलमोहर | 21 |
| जरुल | 23 |
| चील | 25 |
| कनेर | 27 |
| अशोक | 29 |
| सहजन | 31 |
| बोगनवेलिया | 33 |
| आम | 35 |
| बालम खीरा | 37 |
| नीम | 39 |
| करीपत्ता | 41 |
| गूलर | 43 |
| बरगद | 45 |
| चंपा | 47 |
| अमलतास | 49 |

# नक्शा

इस मानचित्र के माध्यम से दिल्ली विश्वविद्यालय की विविध हरियाली की खोज करें

आख्यान

- सहजन
- वरुण
- कचनार
- गूलर
- चंपा
- करंज 1
- करंज 2
- दलूर
- चील
- बोगनवेलिया
- नीम और पीपल
- गुम्बा
- अशोक
- पंचगनी
- कदम्ब
- सेमल
- बरगद 1
- बरगद 2
- आम
- करीपत्ता
- सफ़ेद बबूल
- अमलतास 1
- अमलतास 2
- अमलतास 3
- सहतूत
- बालम खीरा
- गुलमोहर 1
- गुलमोहर 2
- गुलमोहर 3
- सप्तपर्णी
- टिकोमा
- कनेर
- नीली गुलमोहर
- जरुल

# नक्शा

दिल्ली विश्वविद्यालय की सैर पर निकलिए और इस नक्शे के साथ यहाँ के पेड़ों को जानिए। ये पेड़ कैंपस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं, जो लंबे समय से ऊँचे और गर्वित खड़े हैं।

विशाल पीपल से लेकर रंगीन नील गुलमोहर तक, हर पेड़ की अपनी खासियत है। नक्शे का पालन करते हुए, पत्तियों की हल्की सरसराहट और शाखाओं के बीच से छनकर आती धूप का आनंद लीजिए। यह अवसर है प्रकृति की सुंदरता को सराहने का और यह देखने का कि कैसे सभी जीवित चीज़ें इस साझा स्थान में एक साथ जीवन बसर करती हैं।

**कैम्पस नेविगेट करने के लिए QR कोड स्कैन करें।**

# कचनार

**साधारण नाम**: कचनार, आर्किड ट्री, माउंटेन एबनी

**विज्ञानिक नाम**: *Bauhinia variegata*

**विवरण**: कचनार, जिसे वैज्ञानिक नाम *Bauhinia variegata* से जाना जाता है, एक फूलों वाले पौधों की जाति है जो फैबासी परिवार से संबंधित है। इन पौधों की पहचान उनके तितली के आकार की पत्तियों और रंग-बिरंगे, आर्किड जैसे फूलों से होती है जो सफेद, गुलाबी से लेकर बैंगनी तक के रंगों में खिलते हैं। कचनार की प्रजातियाँ उनके सजावटी मूल्य के कारण बागानों और परिदृश्यों में आमतौर पर उगाई जाती हैं।

**आवास**: कचनार प्रजातियाँ एशिया, अफ्रीका, और अमेरिका के विभिन्न क्षेत्रों की मूल निवासी हैं। ये अक्सर उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में पाई जाती हैं, जहाँ अच्छी तरह से जल निकासी वाले मिट्टी और पूर्ण धूप में पनपती हैं।

**विशेषताएँ**: कचनार के फूल न केवल सुंदर होते हैं बल्कि कुछ क्षेत्रों में सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। सजावटी उपयोग के अलावा, कुछ प्रजातियाँ औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं और पारंपरिक हर्बल उपचार में इस्तेमाल की जाती हैं।

# वरूण

**साधारण नाम**: वरुण

**विज्ञानिक नाम**: *Crateva religiosa*

**विवरण**: वरुण, जिसे वैज्ञानिक नाम *Crateva religiosa* से जाना जाता है, एक छोटा से मध्यम आकार का पतझड़ वाला पेड़ है जो दक्षिण-पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया का मूल निवासी है। यह अपने सजावटी मूल्य के साथ-साथ हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में धार्मिक महत्व के लिए भी उगाया जाता है। यह पेड़ छोटे, सफेद फूलों के गुच्छे उगाता है जिनमें पीले पुंकेसर होते हैं, और इसके बाद गोलाकार फल होते हैं जो पकने पर हरे से भूरे रंग में बदल जाते हैं।

**आवास**: वरुण आमतौर पर नदी किनारों, नम जंगलों, और अस्थिर क्षेत्रों में उगता है। यह अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी में पनपता है और पूरी धूप और आंशिक छांव दोनों को सहन कर सकता है।

**विशेषताएँ**: धार्मिक महत्व के अतिरिक्त, वरुण के विभिन्न भाग पारंपरिक चिकित्सा में बुखार, खांसी, और त्वचा रोगों जैसे रोगों के इलाज के लिए उपयोग किए जाते हैं। इसकी छाल, पत्तियाँ, और फल सभी औषधीय गुणों के लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

# करंज

**साधारण नाम**: करंज, पाँगेमिया ऑयलट्री

**विज्ञानिक नाम**: *Millettia pinnata*

**विवरण**: *Millettia pinnata*, जिसे आमतौर पर पाँगेमिया या करंज कहा जाता है, एक मध्यम आकार का, हरा-भरा पेड़ है जो एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। यह अपने संयुक्त पत्तियों और छोटे, बैंगनी फूलों के गुच्छों के लिए जाना जाता है, जो चपटा, भूरे रंग के बीजपॉड में विकसित होते हैं। करंज की पहचान इसकी कठिन परिस्थितियों में पनपने की क्षमता और इसके कई उपयोगों के लिए की जाती है, जिसमें बायोडीजल, लकड़ी, और पारंपरिक चिकित्सा शामिल है।

**आवास**: करंज के पेड़ आमतौर पर तटीय क्षेत्रों, नदी किनारों, और सूखी, रेतीली मिट्टी में उगते हैं। ये उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से लेकर शुष्क परिदृश्यों तक, विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं।

**विशेषताएँ**: करंज के बीजों में तेल की उच्च सांद्रता होती है, जिसे बायोडीजल में परिवर्तित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पेड़ के विभिन्न भाग, जैसे छाल, पत्तियाँ, और जड़ें, पारंपरिक चिकित्सा में गाउट, खांसी, दस्त और सूजन जैसी स्थितियों के इलाज के लिए उपयोग की जाती हैं।

# कर्णिकार

**साधारण नाम**: कर्णिकार, कनक चंपा, मुञ्चकुंड

**विज्ञानिक नाम**: *Pterospermum acerifolium*

**विवरण**: *Pterospermum acerifolium*, जिसे सामान्यतः कर्णिकार कहा जाता है, एक बड़ा, पर्णपाती पेड़ है जो दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया का मूल निवासी है। इसे मेपल जैसी पत्तियों और सुगंधित, घंटी के आकार के फूलों के गुच्छों के लिए पहचाना जाता है। कर्णिकार की सजावटी मूल्य के लिए प्रशंसा की जाती है और इसके विभिन्न चिकित्सीय गुणों के लिए पारंपरिक चिकित्सा में भी उपयोग किया जाता है।

**आवास**: कर्णिकार के पेड़ आमतौर पर उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं, अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी में उगते हैं और पूरी धूप या आंशिक छांव में पनपते हैं।

**विशेषताएँ**: कर्णिकार के फूल अत्यधिक सुगंधित होते हैं और भौंरे और तितलियों जैसे परागणकों को आकर्षित करते हैं। पारंपरिक चिकित्सा में, पेड़ के विभिन्न भाग, जैसे छाल, पत्तियाँ, और फूल, त्वचा रोगों, सूजन, और श्वसन समस्याओं जैसी बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग किए जाते हैं।

# सफेद बबूल

**साधारण नाम**: सफेद बबूल , जंगली इमली

**विज्ञानिक नाम**: *Leucaena leucocephala*

**विवरण**: सफेद बबूल, जिसे वैज्ञानिक नाम *Leucaena leucocephala* से जाना जाता है, एक तेजी से बढ़ने वाला, बारहमासी झाड़ या छोटा पेड़ है जो मध्य अमेरिका और मेक्सिको का मूल निवासी है, लेकिन अब उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से फैला हुआ है। इसकी पहचान इसके पंखों जैसी पत्तियों और सफेद या हल्के पीले फूलों के गुच्छों से होती है, जो भौंरे और तितलियों जैसे परागणकों को आकर्षित करते हैं। सफेद बबूल को इसके नाइट्रोजन-फिक्सिंग गुणों के लिए मूल्यवान माना जाता है, जिससे यह मिट्टी सुधार और पशुधन के लिए चारा फसल के रूप में उपयोगी होता है।

**आवास**: सफेद बबूल विभिन्न आवासों में अच्छी तरह से पनपता है, जैसे उष्णकटिबंधीय जंगल, घास के मैदान, और अस्थिर क्षेत्र। यह अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी को पसंद करता है और सूखा से लेकर आर्द्र जलवायु तक, विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों को सहन कर सकता है।

**विशेषताएँ**: सफेद बबूल की पत्तियाँ और बीज उच्च प्रोटीन स्तरों से भरपूर होते हैं और पशुधन के लिए चारा के रूप में उपयोग किए जाते हैं। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि सफेद बबूल की पत्तियों में ऐसे यौगिक होते हैं जो कुछ जानवरों के लिए बड़े मात्रा में सेवन करने पर विषैले हो सकते हैं, इसलिए उचित प्रबंधन आवश्यक है। इसके अलावा, सफेद बबूल की तेजी से वृद्धि और उच्च सेल्यूलोज़ सामग्री के कारण इसे बायोफ्यूल उत्पादन के लिए बायोमास के संभावित स्रोत के रूप में भी जांचा जा रहा है।

ABVP

# कदंब

**साधारण नाम**: कदंब, बुरफ्लावर ट्री

**विज्ञानिक नाम**: *Neolamarckia cadamba*

**विवरण**: *Neolamarckia cadamba*, जिसे सामान्यतः कदंब कहा जाता है, एक तेजी से बढ़ने वाला, पर्णपाती पेड़ है जो दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया का मूल निवासी है। इसे अपनी बड़ी, छतरी के आकार की छांव और सुगंधित, पीले-नारंगी फूलों के गुच्छों के लिए जाना जाता है, जो प्रचुर मात्रा में खिलते हैं। कदंब पेड़ सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं और अक्सर मंदिरों और पवित्र स्थलों के पास लगाए जाते हैं।

**आवास**: कदंब पेड़ उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से पनपते हैं, नम, अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप को पसंद करते हैं। ये आमतौर पर निचले जंगलों, नदी किनारों, और अस्थिर क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

**विशेषताएँ**: कदंब के फूलों को उनकी मीठी सुगंध के लिए अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है और धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों में उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक महत्व के अतिरिक्त, पेड़ के विभिन्न भाग, जैसे छाल, पत्तियाँ, और फूल, पारंपरिक चिकित्सा में बुखार, सूजन, और त्वचा रोगों जैसी स्थितियों के इलाज के लिए उपयोग किए जाते हैं।

# जंगल जलेबी

**साधारण नाम**: जंगल जलेबी, मद्रास थॉर्न

**विज्ञानिक नाम**: *Pithecellobium dulce*

**विवरण**: *Pithecellobium dulce*, जिसे सामान्यतः जंगल जलेबी कहा जाता है, एक छोटा से मध्यम आकार का पेड़ है जो मेक्सिको, मध्य अमेरिका, और उत्तरी दक्षिण अमेरिका का मूल निवासी है। इसे अपनी घनी, फैलती छांव और छोटे पत्तियों से बनी संयुक्त पत्तियों के लिए पहचाना जाता है। यह पेड़ सुगंधित, क्रीम रंग के फूलों का उत्पादन करता है, जिनके बाद मुड़े हुए, भूरे रंग के फली बनते हैं जिनमें मीठा, खाने योग्य गूदा होता है। जंगल जलेबी को इसकी छांव और खाने योग्य फलों के लिए उगाया जाता है।

**आवास**: जंगल जलेबी उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से पनपता है, और विभिन्न आवासों में उगता है, जैसे तटीय क्षेत्रों, सवाना, और अस्थिर परिदृश्य। इसे अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी पसंद होती है और एक बार स्थापित हो जाने पर सूखा सहन कर सकता है।

**विशेषताएँ**: जंगल जलेबी के फली का मीठा गूदा ताजे रूप में आनंद लिया जाता है या जैम, सिरप, और पेय पदार्थों में इस्तेमाल किया जाता है। इस पेड़ का पारंपरिक हर्बल चिकित्सा में भी उपयोग होता है, जिसमें विभिन्न भागों का उपयोग दांत दर्द, कान में दर्द, और दस्त जैसी समस्याओं के इलाज के लिए किया जाता है।

# शहतूत

**साधारण नाम**: सेहतूत, मलबेरी

**विज्ञानिक नाम**: *Morus* spp.

**विवरण**: Morus, जिसे सामान्यतः सेहतूत कहा जाता है, एक पर्णपाती पेड़ की जाति है जो समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। सेहतूत के पेड़ अपनी खंडित पत्तियों और छोटे, बेलनाकार फलों के लिए जाने जाते हैं, जो प्रजाति और किस्म के अनुसार सफेद, लाल, या काले रंग के होते हैं। इन पेड़ों को उनके खाने योग्य फलों के लिए उगाया जाता है, जिन्हें ताजे खाया जा सकता है या जैम, जेली, पाई, और अन्य व्यंजनों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

**आवास**: सेहतूत के पेड़ विभिन्न आवासों में अच्छी तरह से पनपते हैं, जैसे जंगल, बाग, और शहरी परिदृश्य। ये अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप को पसंद करते हैं, लेकिन विभिन्न मिट्टी प्रकारों और पर्यावरणीय परिस्थितियों को सहन कर सकते हैं।

**विशेषताएँ**: खाद्य उपयोग के अलावा, सेहतूत के पेड़ों का विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक महत्व भी है। रेशम उत्पादन में White Mulberry (*Morus alba*) का घनिष्ठ संबंध है क्योंकि इसके पत्ते रेशम के कीड़ों के लिए प्राथमिक आहार होते हैं। सेहतूत के फल भी विटामिन, खनिज, और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होते हैं, जो इसके पोषण मूल्य में योगदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, सेहतूत की पत्तियों का पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग संभावित स्वास्थ्य लाभों के लिए किया जाता है, जैसे रक्त शर्करा स्तर को कम करना, गले में खराश और दृष्टि में सुधार।

# गुलमोहर

**साधारण नाम**: गुलमोहर

**विज्ञानिक नाम**: *Delonix regia*

**विवरण**: *Delonix regia*, जिसे सामान्यतः गुलमोहर कहा जाता है, एक फूलों वाले पौधों की जाति है जो मटर परिवार (Fabaceae) से संबंधित है। यह अपने चमकदार लाल-नारंगी फूलों के शानदार प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध है, जो फूलों के मौसम के दौरान पेड़ को ढक देते हैं, और एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न करते हैं। इस पेड़ की पत्तियाँ द्विसंयोजित होती हैं और इसकी छांव फैलाने वाली छांव होती है, जो उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय परिदृश्यों में भरपूर छाया प्रदान करती है।

**आवास**: गुलमोहर के पेड़ उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से पनपते हैं, अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप को पसंद करते हैं। ये विश्वभर के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जिनमें अफ्रीका, एशिया, कैरिबियन, और दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्से शामिल हैं।

**विशेषताएँ**: गुलमोहर के फूलों की आकर्षक सुंदरता इसे पार्कों, बागों, और सड़कों के किनारे एक लोकप्रिय सजावटी पेड़ बनाती है। इसके सौंदर्य मूल्य के अतिरिक्त, इस पेड़ का विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक महत्व भी है, जहां इसे त्योहारों और समारोहों में मनाया जाता है। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि पेड़ के फूल दृश्य रूप से शानदार होते हैं, लेकिन यह कोई महत्वपूर्ण फल नहीं उत्पन्न करता।

# सेमल

**साधारण नाम**: सेमल, शाल्मली, कपोक

**विज्ञानिक नाम**: *Bombax ceiba*

**विवरण**: *Bombax ceiba*, जिसे सामान्यतः सेमल कहा जाता है, एक बड़ा पर्णपाती पेड़ है जो एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। इसे इसके विशाल तने के लिए पहचाना जाता है, जो अक्सर बड़े, शंक्वाकार कांटों से ढका होता है, और इसके शानदार लाल फूलों के लिए, जो सूखे मौसम के दौरान खिलते हैं। फूल आने से पहले पेड़ अपनी पत्तियाँ छोड़ देता है, जिससे खिलते समय इसका दृश्य प्रभाव अत्यंत आकर्षक हो जाता है।

**आवास**: सेमल के पेड़ आमतौर पर निचले जंगलों, नदी किनारों, और शहरी परिदृश्यों में पाए जाते हैं। ये अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप को पसंद करते हैं, और गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह से पनपते हैं।

**विशेषताएँ**: सेमल का पेड़ अपने व्यावसायिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए मूल्यवान है। इसके हल्के, तैरने योग्य रेशे, जिन्हें कपोक के नाम से जाना जाता है, विभिन्न उद्योगों में उपयोग किए जाते हैं, जैसे कि इंसुलेशन, तकिए और गद्दों के भराव के रूप में, और तैरने के उपकरण के रूप में। इसके अतिरिक्त, यह पेड़ कई एशियाई देशों में सांस्कृतिक महत्व रखता है, जहां इसे प्रजनन, सहनशीलता, और सुरक्षा के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।

# नीली गुलमोहर

**साधारण नाम**: नीली गुलमोहर, जैकारांडा

**विज्ञानिक नाम**: *Jacaranda mimosifolia*

**विवरण**: *Jacaranda mimosifolia*, जिसे सामान्यतः नीली गुलमोहर कहा जाता है, एक फूलों वाले पेड़ की प्रजाति है जो दक्षिण अमेरिका, विशेषकर अर्जेंटीना और ब्राज़ील का मूल निवासी है। इसे वसंत के मौसम में अपने शानदार बैंगनी-नीले फूलों के प्रदर्शन के लिए जाना जाता है, जो पेड़ को ढक लेते हैं और एक सुंदर दृश्य उत्पन्न करते हैं। इस पेड़ की पत्तियाँ द्विसंयोजित होती हैं, जिनमें छोटे पत्ते होते हैं, और इसकी छांव फैलाने वाली छांव होती है, जिससे यह उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक लोकप्रिय सजावटी पेड़ बन जाता है।

**आवास**: नीली गुलमोहर के पेड़ विभिन्न आवासों में अच्छी तरह से पनपते हैं, जैसे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगल, साथ ही शहरी परिदृश्य में भी। इन्हें अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप पसंद होती है, लेकिन कुछ छांव भी सहन कर सकते हैं।

**विशेषताएँ**: नीली गुलमोहर के पेड़ों के जीवंत फूल परागणकों जैसे भौंरे और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जो इसके सजावटी आकर्षण को बढ़ाते हैं। इसकी सुंदरता के अतिरिक्त, नीली गुलमोहर के पेड़ की लकड़ी को उसकी मजबूती के लिए मूल्यवान माना जाता है और इसका उपयोग फर्नीचर, फर्श, और सजावटी वस्तुओं में किया जाता है। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि पेड़ के फूल कुछ व्यक्तियों में एलर्जी की प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकते हैं।

# जरुल

**साधारण नाम**: जरुल, फुरुष

**विज्ञानिक नाम**: *Lagerstroemia speciosa*

**विवरण**: *Lagerstroemia speciosa*, जिसे सामान्यतः जरुल या फुरुष कहा जाता है, एक फूलों वाला झाड़ी या छोटा पेड़ है जो पूर्व एशिया का मूल निवासी है। इसे गर्मियों के महीनों में गुच्छों में खिलने वाले रंगीन फूलों के लिए सराहा जाता है, जो सफेद, गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों में होते हैं। फुरुष की चिकनी, छिलकदार छाल और चमकदार, गहरे हरे पत्ते होते हैं जो पतझड़ में नारंगी, लाल या पीले रंग में बदल जाते हैं।

**आवास**: जरुल विभिन्न आवासों में अच्छी तरह से पनपता है, जैसे वन, झाड़ियों, और शहरी परिदृश्य। इसे अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी और पूरी धूप पसंद होती है, लेकिन कुछ छांव भी सहन कर सकता है।

**विशेषताएँ**: जरुल के पेड़ के शानदार फूल परागणकों जैसे भौंरे, तितलियों, और हुमिंगबर्ड्स को आकर्षित करते हैं, जिससे यह बागवानी परिदृश्यों में पसंदीदा बन जाता है। इसके अतिरिक्त, पेड़ की रंगीन पत्तियाँ साल भर आकर्षण प्रदान करती हैं, गर्मियों और पतझड़ दोनों में शानदार प्रदर्शन के साथ। इसे कीटों और बीमारियों के प्रति प्रतिरोध के लिए भी मूल्यवान माना जाता है, और एक बार स्थापित हो जाने पर सूखा सहन करने की क्षमता भी होती है।

# चील

**साधारण नाम**: चील, बोटलब्रश

**विज्ञानिक नाम**: *Callistemon* spp.

**विवरण**: चील पौधा अपने सिलिंड्रिकल फूलों के लिए जाना जाता है, जो बोतल ब्रश की ब्रिसल्स की तरह दिखते हैं। ये जीवंत लाल, गुलाबी, या कभी-कभी पीले रंग के फूल गुच्छों में शाखाओं के सिरों पर लगे होते हैं, जो एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह पौधा सदाबहार होता है और सामान्यतः झाड़ी या छोटे पेड़ के रूप में उगता है।

**आवास**: चील पौधे ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासी हैं, जहाँ ये आमतौर पर तटीय क्षेत्रों, वनस्पतियों, और heathlands में पाए जाते हैं। ये धूप वाली जगहों पर अच्छी तरह से जल निकासी वाली मिट्टी में पनपते हैं।

**विशेषताएँ**: चील पौधे की एक खासियत यह है कि यह अपने आकर्षक फूलों के साथ अमृत-खाने वाले पक्षियों को आकर्षित करता है, जैसे हुमिंगबर्ड्स और हनीइटर्स। इसके अतिरिक्त, यह पौधा एक बार स्थापित हो जाने पर सूखा सहन करने की क्षमता रखता है, जिससे यह xeriscaping (लैंडस्केपिंग या बागवानी की प्रक्रिया जो सिंचाई की आवश्यकता को कम या समाप्त करती है) और कम-रखरखाव वाले परिदृश्यों के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बन जाता है।

# कनेर

**साधारण नाम**: कनेर

**विज्ञानिक नाम**: *Thevetia peruviana*

**विवरण**: कनेर एक फूलदार झाड़ी है, जो अपने चमकदार, गहरे हरे पत्तों और तुरही के आकार के फूलों के लिए जानी जाती है। इसके फूल पीले से लेकर नारंगी रंग के होते हैं और कभी-कभी इनमें लालिमा की झलक भी देखी जा सकती है। कनेर छोटे, नाशपाती के आकार के फल उत्पन्न करता है, जिनमें बीज होते हैं।

**आवास**: कनेर मूलतः मध्य और दक्षिण अमेरिका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का निवासी है, लेकिन अब इसे दुनिया भर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से उगाया जाता है। यह गर्म जलवायु में पनपता है और इसे अक्सर बगीचों, पार्कों और सड़क के किनारे सजावटी पौधे के रूप में देखा जा सकता है।

**विशेषताएँ**: कनेर अपनी आकर्षक उपस्थिति के लिए मूल्यवान है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पौधे के सभी भाग, विशेष रूप से बीज, विषैले कार्डियक ग्लाइकोसाइड्स से भरपूर होते हैं। इसके सेवन से मनुष्यों और जानवरों में गंभीर विषाक्तता हो सकती है और यह जानलेवा भी हो सकता है।

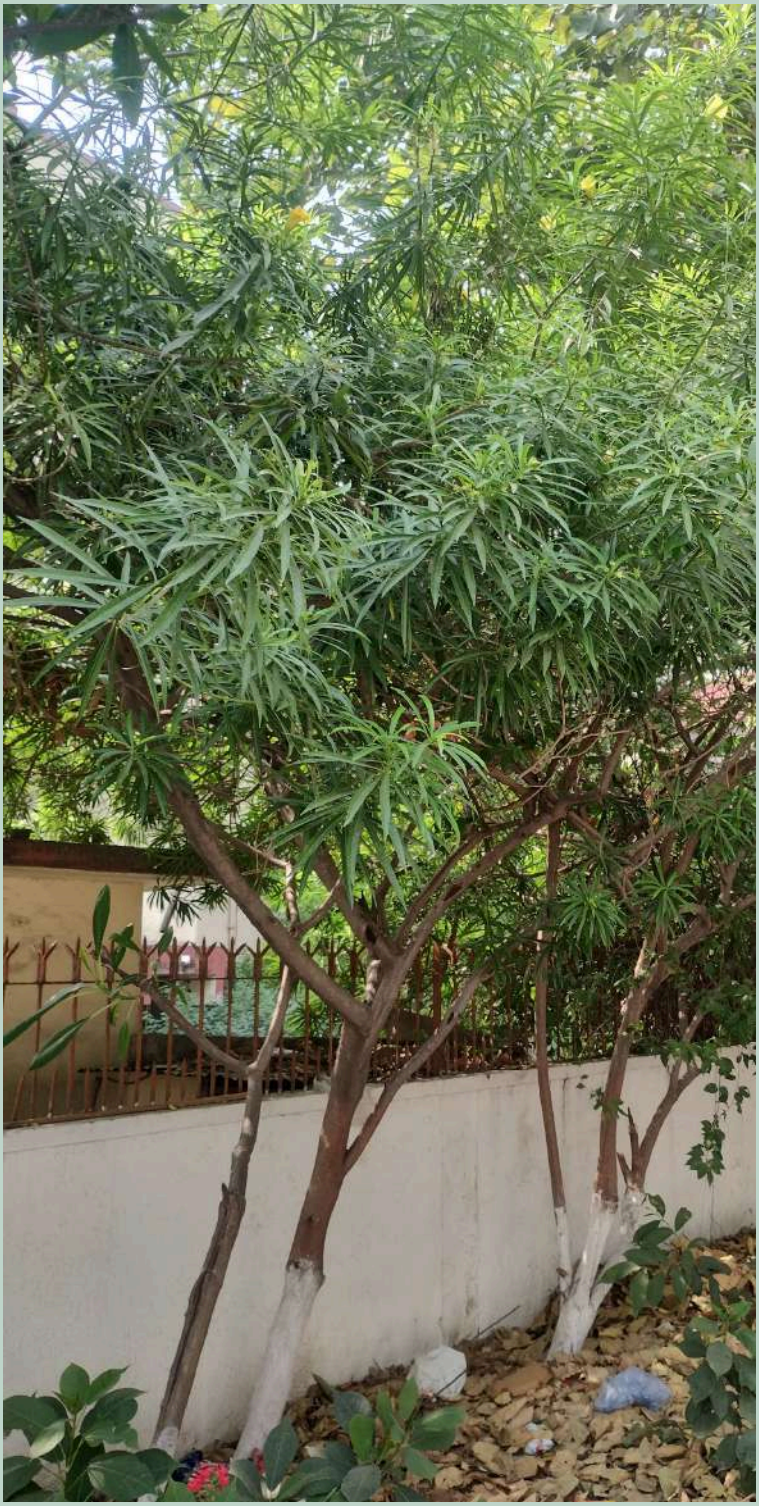

# अशोक

**साधारण नाम**: अशोक

**विज्ञानिक नाम**: *Saraca asoca*

**विवरण**: अशोक का पेड़ एक सुंदर सदाबहार वृक्ष है, जो अपनी घनी पत्तियों और सुगंधित, नारंगी-पीले फूलों के गुच्छों के लिए जाना जाता है। इसके फूल लंबे, पतले पंखुड़ियों वाले होते हैं और बड़ी संख्या में खिलते हैं, जिससे एक अद्भुत पुष्प प्रदर्शन होता है। इस पेड़ में चमकदार, गहरे हरे रंग की संयुक्त पत्तियाँ होती हैं, जो इसकी शोभा को और बढ़ाती हैं।

**आवास**: अशोक का पेड़ भारतीय उपमहाद्वीप का मूल निवासी है, विशेष रूप से पश्चिमी घाट और पूर्वी हिमालय क्षेत्रों में पाया जाता है। यह उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में पनपता है और आंशिक छाया को पसंद करता है, लेकिन ठंडे जलवायु में यह पूर्ण सूर्य को भी सहन कर सकता है।

**विशेषताएँ**: हिंदू पौराणिक कथाओं और संस्कृति में अशोक का पेड़ महत्वपूर्ण प्रतीकात्मकता रखता है और इसे प्रेम, उर्वरता और सुरक्षा से जोड़ा जाता है। इसे अक्सर मंदिरों के आँगनों और घरों के आसपास एक पवित्र वृक्ष के रूप में लगाया जाता है। इसके अलावा, अशोक के पेड़ के विभिन्न हिस्सों, जैसे कि छाल और फूल, का पारंपरिक आयुर्वेदिक चिकित्सा में औषधीय गुणों के लिए उपयोग किया जाता है।

# सहजन

**साधारण नाम**: सहजन

**विज्ञानिक नाम**: *Moringa oleifera*

**विवरण**: सहजन का पेड़, जिसे मोरिंगा के नाम से भी जाना जाता है, एक तेजी से बढ़ने वाला पर्णपाती वृक्ष है, जिसमें पतली, लम्बी शाखाएँ और संयुक्त पत्तियाँ होती हैं, जो छोटे, अंडाकार पत्रक से बनी होती हैं। यह पेड़ लंबे, बेलनाकार फली उत्पन्न करता है, जिन्हें आमतौर पर सहजन कहा जाता है, जिनमें बीज फाइबरयुक्त गूदे से घिरे होते हैं। इसके पत्ते और फली दोनों ही खाने योग्य और अत्यधिक पौष्टिक होते हैं।

**आवास**: सहजन का पेड़ भारतीय उपमहाद्वीप का मूल निवासी है, और अब इसे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विश्वभर में उगाया जाता है। यह शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु में पनपता है और अक्सर घरेलू बगीचों, खेतों और सड़कों के किनारे पाया जाता है।

**विशेषताएँ**: सहजन के पेड़ को उसके पोषण लाभ और औषधीय गुणों के लिए अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है। इसके पत्ते विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं, जबकि फली प्रोटीन, फाइबर और आवश्यक पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत हैं। इसके अलावा, सहजन के पेड़ के विभिन्न हिस्सों, जैसे कि पत्ते, बीज, और जड़ें, का पारंपरिक चिकित्सा में उनके सूजनरोधी, रोगाणुरोधी और मधुमेहरोधी गुणों के लिए उपयोग किया जाता है।

# बोगनवेलिया

**साधारण नाम**: बोगनवेलिया

**विज्ञानिक नाम**: *Bougainvillea* spp.

**विवरण**: बोगनवेलियाएक फूलदार लता या झाड़ी है, जिसे इसके चमकीले और आकर्षक ब्रैक्ट्स (संशोधित पत्तियां) के लिए जाना जाता है, जो छोटे और सामान्यतः अदृश्य फूलों को घेरते हैं। ये ब्रैक्ट्स गुलाबी, लाल, बैंगनी, नारंगी और सफेद सहित कई रंगों में आते हैं, जो एक शानदार दृश्य प्रदान करते हैं। बोगनवेलिया को दीवारों, बाड़ों, और मण्डपों को अपने सघन पत्तों और रंगीन ब्रैक्ट्स से ढकने की क्षमता के लिए सराहा जाता है।

**आवास**: बोगनवेलिया का मूल निवास दक्षिण अमेरिका, विशेष रूप से ब्राजील में है, और अब इसे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विश्वभर में उगाया जाता है। यह गर्म जलवायु, पर्याप्त धूप, और अच्छी जलनिकासी वाली मिट्टी में पनपता है। बोगनवेलिया को आमतौर पर बगीचों, पार्कों, और परिदृश्यों में एक शोभायमान पौधे के रूप में उपयोग किया जाता है।

**विशेषताएँ**: बोगनवेलिया अपनी सूखा सहनशीलता और शुष्क परिस्थितियों में भी अधिक फूलने की क्षमता के लिए जाना जाता है। यह एक कम रखरखाव वाली पौधा है जिसे एक बार स्थापित होने के बाद न्यूनतम देखभाल की आवश्यकता होती है, जिससे यह गर्म, शुष्क जलवायु वाले परिदृश्यों में लोकप्रिय है। इसके नाजुक दिखने के बावजूद, बोगनवेलिया एक सख्त और सहनशील पौधा है जो गर्मी, हवा, और खराब मिट्टी की परिस्थितियों का सामना कर सकता है।

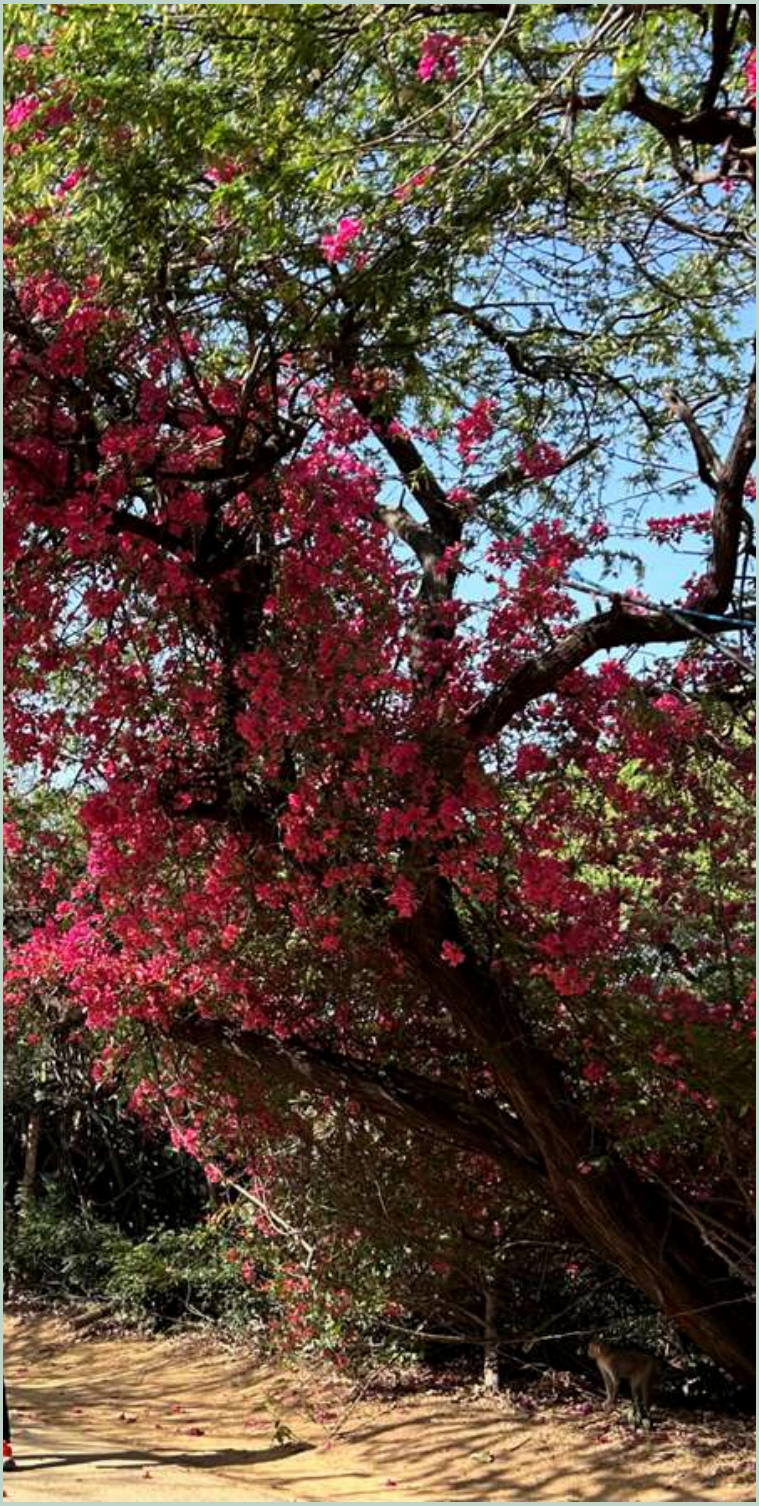

# आम

**साधारण नाम**: आम

**विज्ञानिक नाम**: *Mangifera indica*

**विवरण**: आम का पेड़ एक बड़ा, सदाबहार वृक्ष है जिसमें गहरे हरे पत्तों का घना आवरण होता है। यह अंडाकार आकार के फलों का उत्पादन करता है, जो किस्म के आधार पर आकार, रूप और रंग में भिन्न हो सकते हैं। आम के फल की त्वचा चिकनी और चमड़े जैसी होती है, जो पकने पर हरे से लेकर पीले-नारंगी रंग की हो जाती है। आम का गूदा रसीला, मीठा और सुगंधित होता है, जिसमें मलाईदार बनावट होती है।

**आवास**: आम का पेड़ दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत और म्यांमार का मूल निवासी है, और अब इसे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विश्वभर में उगाया जाता है। ये गर्म जलवायु, पर्याप्त धूप और अच्छी जलनिकासी वाली मिट्टी में पनपता है। आम के पेड़ आमतौर पर बागों, बगीचों और घरेलू परिदृश्यों में पाए जाते हैं, जहां इन्हें उनके स्वादिष्ट फलों और छाया प्रदान करने वाले छत्र के लिए महत्व दिया जाता है।

**विशेषताएँ**: आम न केवल स्वादिष्ट होते हैं बल्कि विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होते हैं, जो इन्हें आहार में एक पौष्टिक तत्व बनाते हैं। फल बहुमुखी होता है और इसे ताजा खाया जा सकता है, रस के रूप में पीया जा सकता है, या विभिन्न पाक अनुप्रयोगों में, जैसे कि मिठाई, स्मूदी और नमकीन व्यंजनों में उपयोग किया जा सकता है। अपने पाक महत्व के अलावा, आम के पेड़ का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी होता है, और इन्हें कई उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में समृद्धि, समृद्धि और आतिथ्य से जोड़ा जाता है।

# बालम खीरा

**साधारण नाम**: बालम खीरा, सॉसेज वृक्ष

**विज्ञानिक नाम**: *Kigelia Africana*

**विवरण**: *Kigelia Africana*, जिसे सामान्यतः बालम खीरा के नाम से जाना जाता है, उप-सहारा अफ्रीका का एक बड़ा, पर्णपाती वृक्ष है। इसे इसके असामान्य फलों के लिए पहचाना जाता है, जो लंबे डंठलों से लटके होते हैं और सॉसेज की तरह दिखते हैं, जिससे इस वृक्ष का विशिष्ट नाम पड़ा है। वृक्ष में बड़ी, घंटी के आकार की, लाल-भूरी फूल भी होते हैं, जो रात में खिलते हैं और रात्रिचर परागणकों, जैसे कि चमगादड़ों को आकर्षित करते हैं।

**आवास**: बालम खीरा वनों, सवाना और नदियों और धाराओं के पास के रिपेरियन क्षेत्रों सहित विभिन्न आवासों में पनपते हैं। ये अच्छी तरह से जलनिकासी वाली मिट्टी और पूर्ण सूर्यप्रकाश को पसंद करते हैं।

**विशेषताएँ**: अपने अनोखे फल और फूलों के अलावा, बालम खीरा के कई पारंपरिक और औषधीय उपयोग होते हैं। वृक्ष के विभिन्न भागों, जैसे कि फल, छाल और पत्तियों का उपयोग पारंपरिक अफ्रीकी चिकित्सा में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है, जिसमें गुर्दे की सफाई, जठरांत्र संबंधी समस्याएं और सूजन शामिल हैं। हालांकि, सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि वृक्ष के कुछ हिस्से बड़ी मात्रा में सेवन करने पर विषाक्त हो सकते हैं।

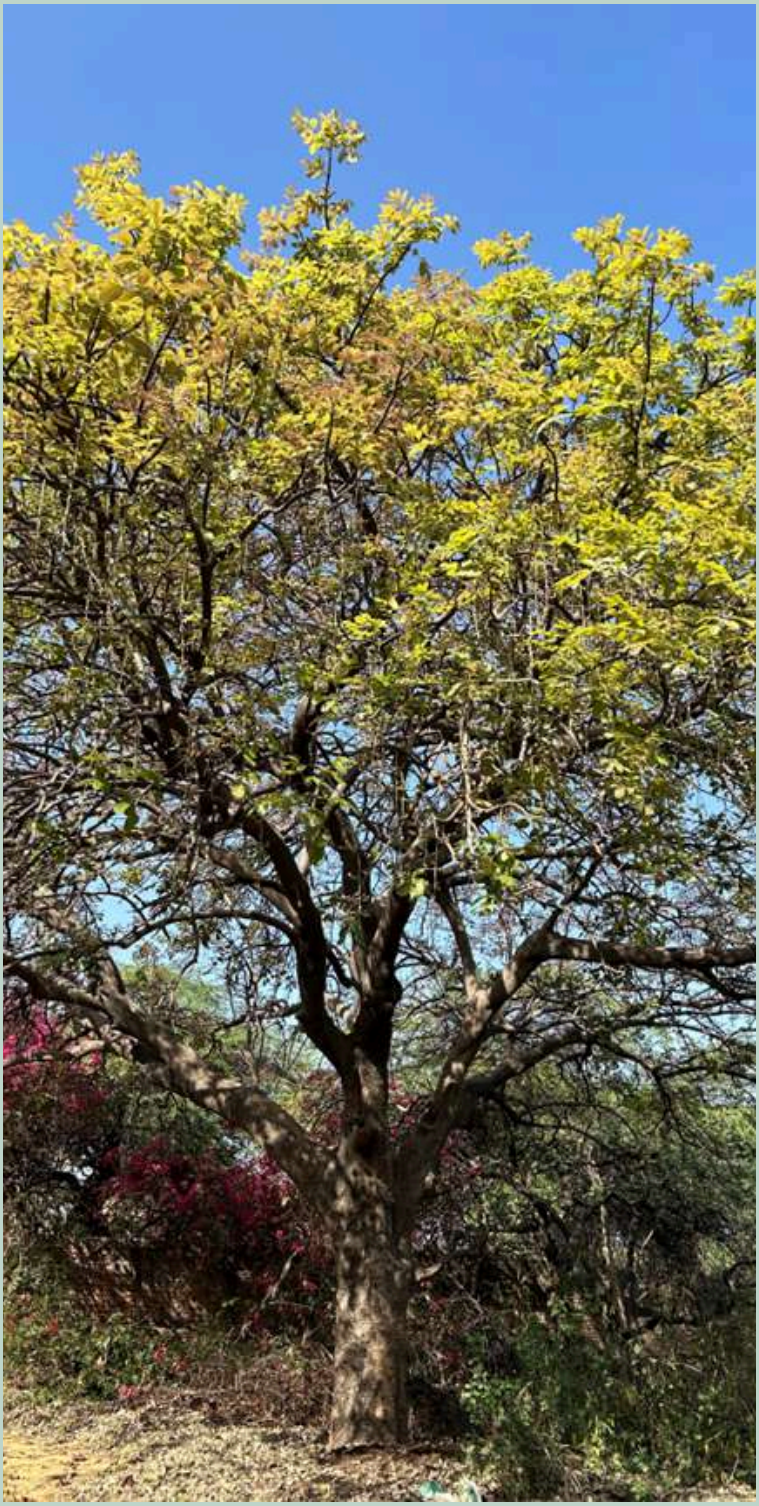

# नीम

**साधारण नाम**: नीम

**विज्ञानिक नाम**: *Azadirachta indica*

**विवरण**: *Azadirachta indica*, जिसे सामान्यत: नीम के पेड़ के नाम से जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों का एक तेजी से बढ़ने वाला सदाबहार वृक्ष है। इसे इसकी यौगिक पत्तियों, छोटे सफेद फूलों, और जैतून जैसे फल के लिए पहचाना जाता है। नीम के पेड़ का पारंपरिक और औषधीय उपयोगों का एक लंबा इतिहास है और इसे इसके विभिन्न लाभकारी गुणों के लिए महत्व दिया जाता है।

**आवास**: नीम के पेड़ विभिन्न आवासों में पनपते हैं, जिनमें उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र शामिल हैं, और ये आमतौर पर शुष्क और अर्ध-शुष्क वातावरण में पाए जाते हैं। ये विभिन्न प्रकार की मिट्टी को सहन कर सकते हैं और एक बार स्थापित हो जाने पर सूखा-प्रतिरोधी होते हैं।

**विशेषताएँ**: नीम के पेड़ को इसके औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है और इसका उपयोग सदियों से पारंपरिक चिकित्सा में किया जा रहा है। वृक्ष के विभिन्न भागों, जैसे कि पत्तियाँ, छाल, बीज, और बीजों से निकाला गया तेल, का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है, जिसमें त्वचा की समस्याएँ, संक्रमण और पाचन संबंधी समस्याएँ शामिल हैं। नीम का तेल सौंदर्य प्रसाधनों, साबुनों, और कृषि अनुप्रयोगों में भी कीटनाशक और विषाणुरोधी गुणों के कारण प्रयोग किया जाता है

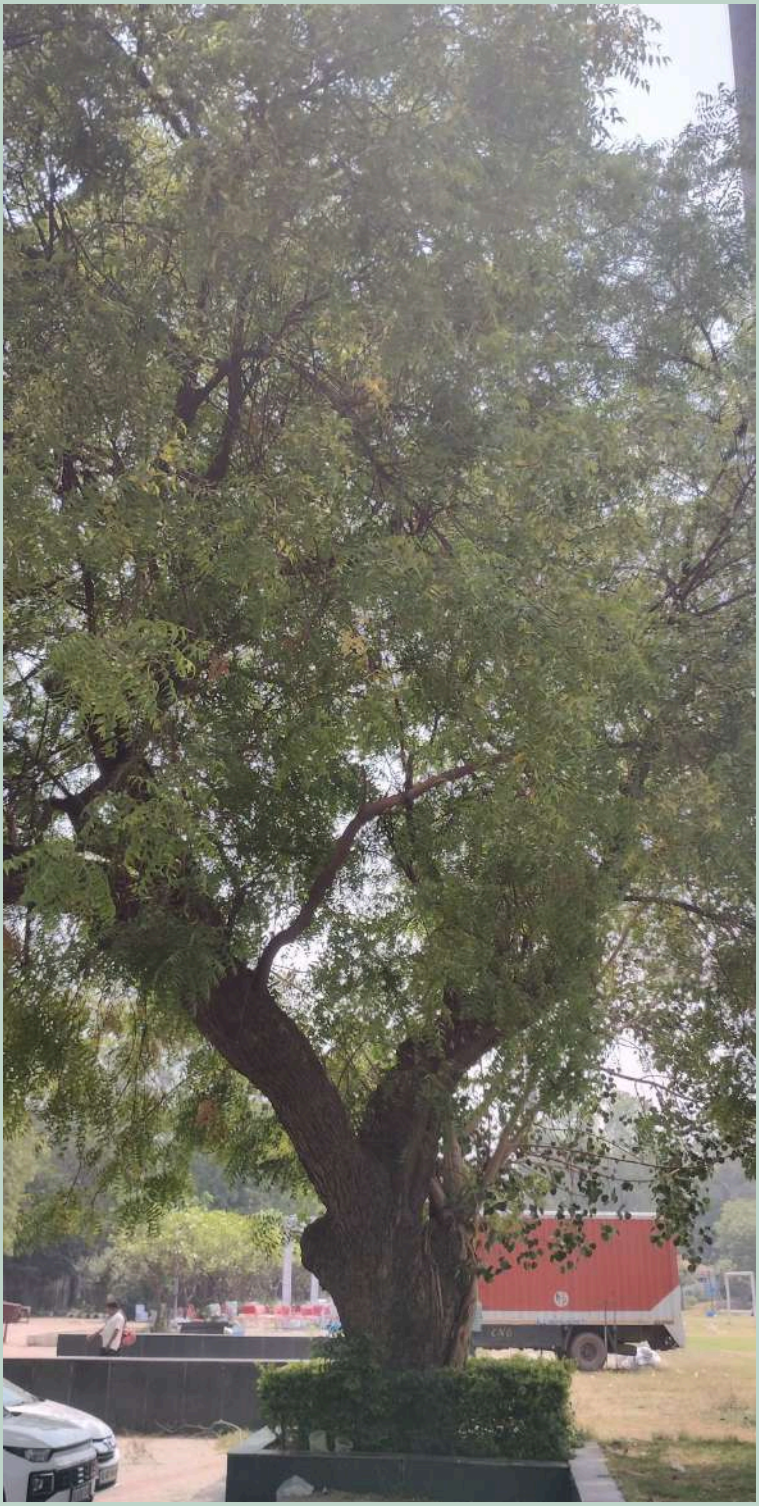

# करीपत्ता

**साधारण नाम**: करीपत्ता, मीठा नीम

**विज्ञानिक नाम**: *Muraya koenigii/Bergera koenigii*

**विवरण**: *Muraya koenigii*(syn. *Bergera koenigii*), जिसे सामान्यतः करी पत्ता या मीठा नीम के नाम से जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप का एक छोटा, सदाबहार पेड़ या झाड़ी है। इसे इसकी सुगंधित पत्तियों के लिए जाना जाता है, जो भारतीय व्यंजनों में विभिन्न पकवानों में स्वाद जोड़ने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल होती हैं। पेड़ पर छोटे, सुगंधित सफेद फूल और काले बेर भी लगते हैं।

**आवास**: करी पत्ता के पेड़ गर्म जलवायु में पनपते हैं, और इन्हें अच्छी जल-निकासी वाली मिट्टी और पूर्ण धूप पसंद होती है, हालांकि ये आंशिक छाया को भी सहन कर सकते हैं। ये आमतौर पर घरेलू बागानों, खेतों और उष्णकटिबंधीय वनों में पाए जाते हैं।

**विशेषताएँ**: अपने पाक उपयोगों के अलावा, करी पत्ता के पेड़ की पत्तियों में औषधीय गुण होते हैं और पारंपरिक चिकित्सा में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग की जाती हैं, जिनमें पाचन संबंधी समस्याएं, बालों का झड़ना, और मधुमेह शामिल हैं।

# गूलर

**साधारण नाम**: गूलर, क्लस्टर अंजीर

**विज्ञानिक नाम**: *Ficus racemosa*

**विवरण**: *Ficus racemosa*, जिसे गूलर या क्लस्टर अंजीर के नाम से जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया का एक अंजीर का पेड़ है। यह अपने बड़े, फैले हुए छत्र और विशेष अंजीर फलों के लिए जाना जाता है, जो शाखाओं पर घने गुच्छों में उगते हैं। ये फल, जिन्हें अंजीर या साइकॉनिया के रूप में जाना जाता है, प्रारंभ में हरे होते हैं और पकने पर बैंगनी या लाल हो जाते हैं। ये फल विभिन्न वन्यजीव प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत हैं।

**आवास**: गूलर के पेड़ उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों में, साथ ही नदियों और धाराओं के पास के जलप्रवाही क्षेत्रों में पनपते हैं। इन्हें अच्छी जल-निकासी वाली मिट्टी और पूर्ण धूप पसंद होती है, हालांकि ये कुछ छाया को भी सहन कर सकते हैं।

**विशेषताएँ**: वन्यजीवों के लिए खाद्य स्रोत के रूप में अपने पारिस्थितिक महत्व के अलावा, गूलर के पेड़ का सांस्कृतिक और औषधीय महत्व भी है। पारंपरिक भारतीय चिकित्सा (आयुर्वेद) में, पेड़ के विभिन्न हिस्सों, जैसे कि छाल, पत्ते, और फल, का उपयोग पाचन विकार, श्वसन समस्याओं और रक्त शुद्धिकरण जैसी बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। ये फल मानव उपभोग के लिए भी होते हैं और इन्हें जैम, संरक्षित खाद्य पदार्थ, और मिठाइयों जैसी पाक तैयारियों में उपयोग किया जाता है।

# बरगद

**साधारण नाम**: बरगद, वट वृक्ष

**विज्ञानिक नाम**: *Ficus benghalensis*

**विवरण**: बरगद का पेड़ एक विशाल और प्रतिष्ठित अंजीर का पेड़ है, जो अपनी फैली हुई वृद्धि और हवाई जड़ों के लिए जाना जाता है। इसके बड़े, दिल के आकार के पत्ते और इसका अद्वितीय प्रजनन विधि इसके प्रमुख लक्षण हैं, जिसमें शाखाओं से हवाई जड़ें नीचे की ओर बढ़ती हैं और अंततः मिट्टी में जड़ पकड़ लेती हैं, जिससे नए तने बनते हैं। इस प्रक्रिया के कारण बरगद के पेड़ फैलते जाते हैं और तनों और शाखाओं के विशाल, जुड़े हुए नेटवर्क का निर्माण करते हैं।

**आवास**: भारत और दक्षिण एशिया के अन्य हिस्सों का मूल निवासी, बरगद का पेड़ उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। यह गर्म जलवायु, प्रचुर मात्रा में धूप और नमी में पनपता है, और अक्सर निम्नभूमि क्षेत्रों, नदी किनारों और मानव बस्तियों के पास उगता है। बरगद के पेड़ सांस्कृतिक और सौंदर्य मूल्य के लिए पार्कों, बगीचों और मंदिरों के मैदानों में भी आमतौर पर लगाए जाते हैं।

**विशेषताएँ**: बरगद के पेड़ का कई समाजों में सांस्कृतिक महत्व है और इसे अक्सर पवित्र या शुभ वृक्ष माना जाता है। इसकी दीर्घायु, लचीलापन, और लोगों और जानवरों को छाया और आश्रय प्रदान करने की क्षमता के लिए इसकी पूजा की जाती है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, बरगद का पेड़ भगवान विष्णु से जुड़ा हुआ है और इसे देवताओं और आत्माओं का निवास माना जाता है। इसके अलावा, पारिस्थितिक दृष्टिकोण से बरगद के पेड़ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों के लिए निवास स्थान प्रदान करते हैं।

# चंपा

**साधारण नाम**: चंपा, प्लूमेरिया

**विज्ञानिक नाम**: *Plumeria* spp.

**विवरण**: चंपा, जिसे प्लूमेरिया भी कहा जाता है, एक उष्णकटिबंधीय फूलों वाला पौधा है, जो अपनी सुगंधित और रंगीन फूलों के लिए जाना जाता है। फूल आमतौर पर सफेद, पीले, गुलाबी या लाल रंग के होते हैं, और इनकी मोमी बनावट और मीठी, नशीली सुगंध होती है। चंपा पौधे छोटे पेड़ या झाड़ होते हैं जिनकी मोटी, मांसल शाखाएँ और लंबी पत्तियाँ होती हैं, जो शाखाओं के सिरों पर गुच्छों में व्यवस्थित होती हैं।

**आवास**: केंद्रीय अमेरिका, मेक्सिको, और कैरिबियन का मूल निवासी, चंपा अब उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विश्वभर में उगाया जाता है। यह गर्म जलवायु, अच्छी तरह से नाले वाले मिट्टी और प्रचुर धूप में पनपता है। चंपा अक्सर बगीचों, पार्कों, और परिदृश्यों में पाया जाता है, जहाँ इसे इसके सुंदर फूलों और सजावटी मूल्य के लिए उगाया जाता है।

**विशेषताएँ**: चंपा के फूल अत्यधिक सुगंधित होते हैं और इनका उपयोग अक्सर लेई, हार, और परफ्यूम बनाने में किया जाता है। चंपा पौधे की रेजिन हल्का विषैला होता है और कुछ व्यक्तियों को त्वचा पर जलन पैदा कर सकता है, इसलिए पौधे को संभालते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

# अमलतास

**साधारण नाम**: अमलतास, गोल्डन शॉवर ट्री

**विज्ञानिक नाम**: *Cassia fistula*

**विवरण**: अमलतास एक तेजी से बढ़ने वाला, मध्यम आकार का पेड़ है जो 30-40 फीट ऊँचा और चौड़ा हो सकता है। इसके शाखाएँ अच्छी तरह से व्यवस्थित होती हैं और पत्तियों के साथ ढकी होती हैं, जो पिनेटली युग्मित होती हैं और प्रत्येक पत्तियों की लंबाई आठ इंच तक और चौड़ाई 2.5 इंच तक हो सकती है। ये पत्तियाँ पतझड़ वाली होती हैं, मतलब सर्दियों में ये पेड़ से गिर जाती हैं।

**आवास**: अमलतास पेड़ को पूर्ण सूर्य और अच्छी तरह से नाले वाली मिट्टी पसंद होती है। यह आंशिक सूखा सहन करने योग्य होता है और कुछ नमक सहन भी कर सकता है, जिससे इसे तटीय क्षेत्रों में लगाने के लिए उपयुक्त माना जाता है। यह पेड़ कीट और रोग प्रतिरोधी भी होता है।

**विशेषताएँ**: अमलतास की सबसे आकर्षक विशेषता इसके फूल हैं। गर्मियों में, पेड़ बड़े, शोभायुक्त पीले फूलों के गुच्छों से सज जाता है जो शाखाओं से लटकते हैं। ये फूल सुगंधित होते हैं और तितलियों और अन्य परागणकर्ताओं को आकर्षित करते हैं। फूलों के बाद लंबे, काले भूरे बीजपत्र बनते हैं जो सर्दियों के दौरान पेड़ पर बने रहते हैं।

# टीम के सदस्य

डॉ. अशनि भादुड़ी

अभिजीत कुमार
आबू ओबैदा ऑरिन
आदित्य पालदास
अमन कुमार पनिका
आशीष कुशवाहा
अथर्व तड़से
देवोदित्त अगवानिया
गौरव राजन
जतिन श्योराण
मनस्विनी द्विवेदी
मो. जॉबेयर हुसैन
मोहम्मद रीज़ा
नितीश कुमार
प्रदीप कुमार तिवारी
प्रखर रघुवंशी
प्रथम सिंह चौहान
प्रियांशु यादव
रेश्मि कुमारी
साई प्रशांत साव
संकल्प त्यागी
श्रेया एस मोती

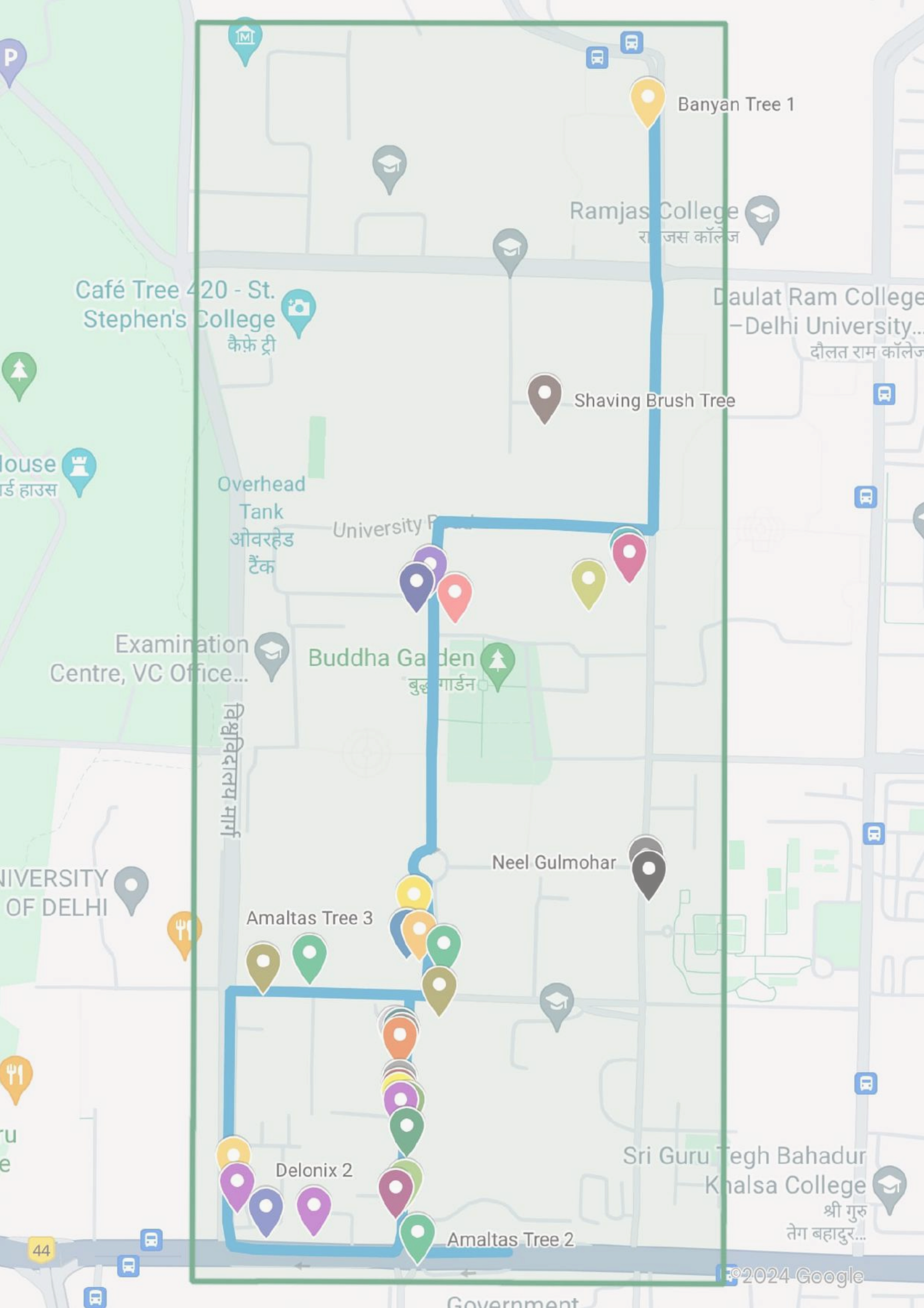
Banyan Tree 1
Ramjas College
रामजस कॉलेज
Café Tree 420 - St. Stephen's College
कैफ़े ट्री
Daulat Ram College – Delhi University...
दौलत राम कॉलेज
Shaving Brush Tree
Overhead Tank
ओवरहेड टैंक
University
Examination Centre, VC Office...
Buddha Garden
बुद्ध गार्डन
विश्वविद्यालय मार्ग
Neel Gulmohar
Amaltas Tree 3
Delonix 2
Amaltas Tree 2
Sri Guru Tegh Bahadur Khalsa College
श्री गुरु तेग बहादुर...
44
©2024 Google